



पूर्वी उत्तर प्रदेश मे दलित समाज के मद्य निषेध का एक सामाजिक विश्लेषण

डॉ यशपाल कन्नौजिया

सहायक प्राध्यापक प्रभु नारायण सिंह पी जी कॉलेज

कसिमबाद, गाजीपुर

उत्तर प्रदेश-

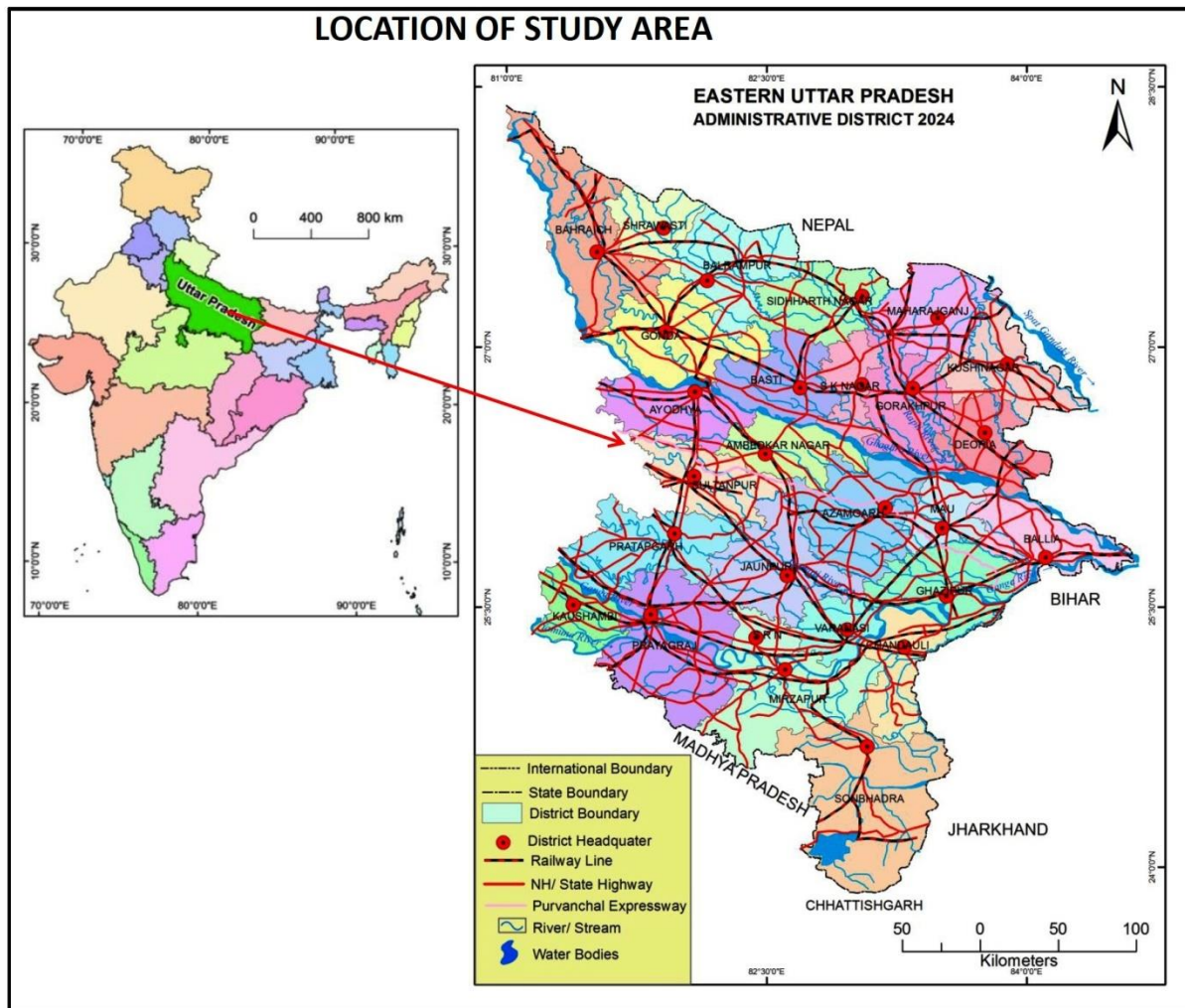
उत्तर प्रदेश भारत के सीमांत प्रदेशों में से एक है। उत्तर में उत्तरांचल एवं नेपाल (देश), पूर्व में बिहार, दक्षिण में मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़, पश्चिम में राजस्थान, हरियाणा एवं दिल्ली स्थित हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह 23° 52' उत्तरी अक्षांश से 30° 25' उत्तरी अक्षांश तथा 77° 3' पूर्वी देशांतर से 84° 39' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 85845 वर्ग किलोमीटर है (जनगणना, 2011) ।

राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल सम्पूर्ण देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 8.9 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश, देश का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है जहाँ देश की कुल जनसंख्या का लगभग 16.49 प्रतिशत भाग निवास करता है। 2011 वर्ष की जनगणना में साक्षरता प्रतिशत 69.72 है, जिसमें पुरुष साक्षरता 79.24 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 59.26 प्रतिशत है। सामाजिक सूचकांक की दृष्टि से उत्तर प्रदेश भारत के सर्वाधिक पिछड़े तीन राज्यों में से एक है। शिशु मृत्यु दर, लिंगभेद तथा महिला साक्षरता के क्षेत्र में भी इस राज्य की हानिकारक है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश को पश्चिमी भाग और पूर्वी भाग में विभाजित कर पूर्वी भाग को शोध कार्य हेतु अध्ययन के लिये चुना गया है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश की स्थिति एवं विस्तार-

पूर्वी उत्तर प्रदेश का विस्तार 80°45' पूर्व से 84°46' पूर्व और 23°45' से 28°30' उत्तर में विस्तृत है व पश्चिमी गंगा के मैदान में एक परिभाषित भौगोलिक क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कुल 27 जनपद- गाजीपुर, गोंडा, आजमगढ़, बस्ती, देवरिया, श्रावस्ती, बहराइच, अयोध्या (फैजाबाद), कौशाम्बी, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, मऊ, जौनपुर, संत कबीर नगर, प्रयागराज (इलाहाबाद), चन्दौली, वाराणसी, बलिया, महाराजगंज, संत रविदास नगर, सुल्तानपुर, गोरखपुर, सोनभद्र, कुशीनगर, अंबेडकर नगर, बलरामपुर एवं सिद्धार्थनगर आते हैं। 1991 की जनगणना के अनुसार जनपदों की संख्या 19 थी। 2002 में इनकी संख्या 27 हो गयी। यह संख्या नये जनपदों के बनाये जाने का परिणाम है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश यह लगभग 8600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल को घेरता है। सन 2001 में इसकी जनसंख्या 4.65 करोड़ तथा घनत्व 485 वर्ग किमी था। भारत के कुछ अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में से एक है। सन् 2011 में जनसंख्या 6.66 करोड़ तथा घनत्व 775 प्रति वर्ग किमी हो गया।



स्रोत: आर्क जी. आई. एस. 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित एवं भारतीय सर्वेक्षण विभाग, 30प्र0 (2022) द्वारा प्राप्त मैप पर डिजिटाइजेशन।

अवस्थिति मानचित्र सं0 1.1

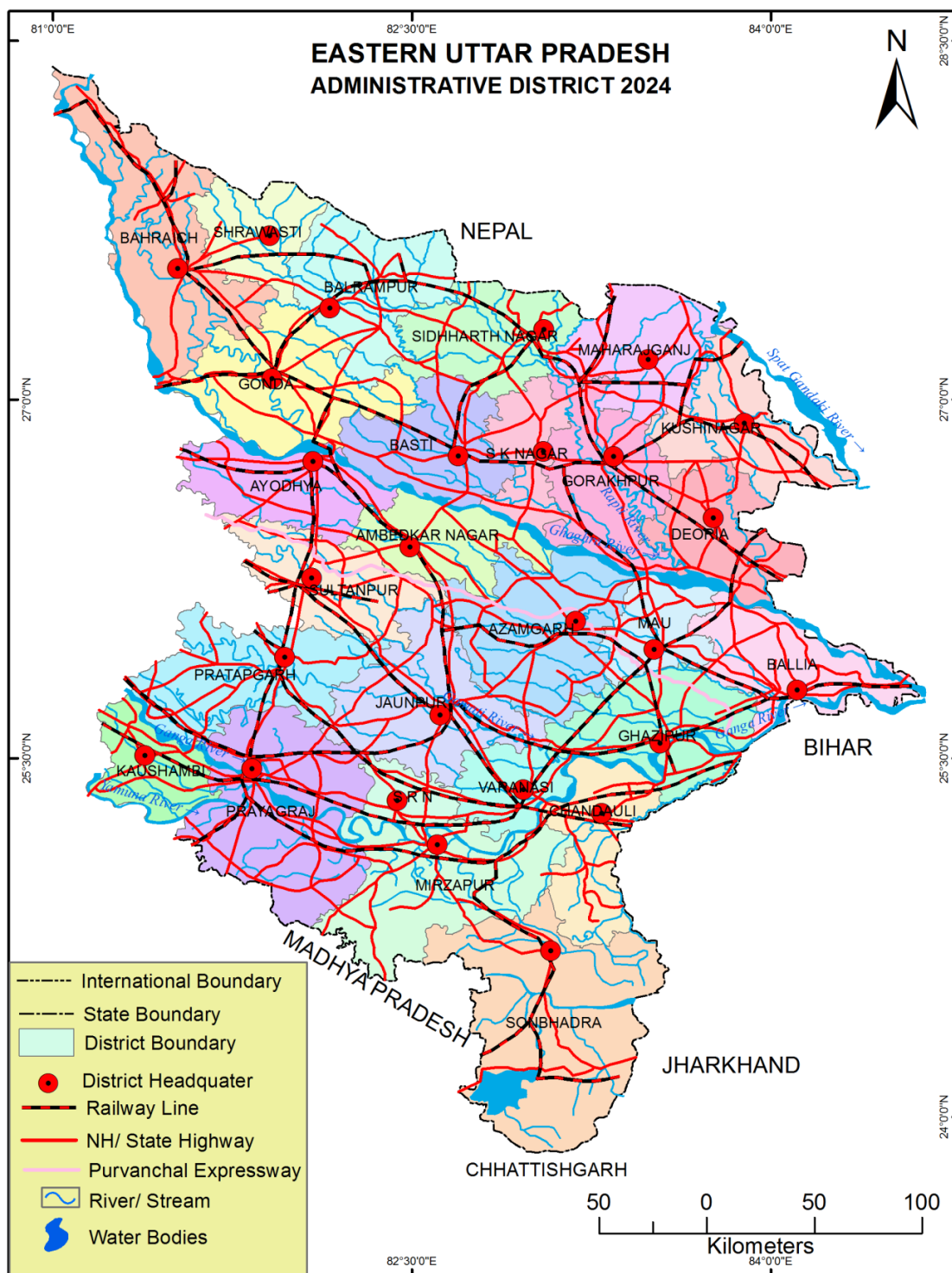
भौगोलिक संरचना-

भौगोलिक संरचना के आधार पर पूर्वी उत्तर प्रदेश को निम्नलिखित तीन प्रमुख जोन में बांटा गया है:

- (1) उत्तरी
- (2) मध्यवर्ती तथा
- (3) दक्षिणी

तीनों जोन की अलग-अलग भौगोलिक संरचना है। उत्तरी क्षेत्र या जोन हिमालय के शिवालिक श्रेणी का हिस्सा है और कुल क्षेत्र का 5 प्रतिशत क्षेत्रफल घेरता है। मध्यवर्ती जोन लगभग पूरे क्षेत्र का 88 प्रतिशत क्षेत्रफल घेरता है। उसका निर्माण गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा छोड़े गये निक्षेपों से हुआ है। यह बालू, सिल्ट और क्ले मिट्टी से बना है यहाँ की मिट्टी की ऊपरी सतह 30 मीटर लगभग गहरी है। इसे दो सब-जोन (उप क्षेत्र) में बाँटा गया है- खादर एवं बांगर। बांगर एल्यूवियम से बना है, जो बड़े हिस्से को घेरता है। नदियों, द्वारा लाकर जमा की गयी तलछट को एल्यूवियम अर्थात् काँप मिट्टी कहा जाता है एवं इसमें चिकनी मिट्टी का अंश अधिक होता है, जबकि खादर मिट्टी उपजाऊ एवं मुलायम है। प्लिस्टोसीन युग से लेकर वर्तमान समय तक गंगा प्रवाहान्तर की नदियां हजारों मीटर जलोढ़

का जमाव कर चुकी है एवं वर्तमान समय में भी कर रही हैं (कृष्णन, 1960) मध्यवर्ती जोन के उत्तर-दक्षिण में एल्यूवियम की चौड़ाई घटती है और मध्य मगहरी होती है। दक्षिणी जोन में विन्ध्यन प्रकार की मिट्टी पाई जाती है जो काले रंग की होती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश का 7 प्रतिशत इस जोन में आता है। यह इस क्षेत्र की पुरानी संरचना है।



स्रोत: आर्क जी. आई. एस. 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित एवं भारतीय सर्वेक्षण विभाग, 30प्र0 (2022) द्वारा प्राप्त मैप पर डिजिटाइजेशन।

अवस्थिति मानचित्र सं0 1.2

प्रमुख साहित्यिक सर्वेक्षणों से यह परिलक्षित होता है कि भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ विद्यमान रही हैं। इनमें सर्वाधिक असमानताएँ जाति विशेष पर आधारित रही हैं। दलित जातियाँ वे समूह हैं जिनका नाम एक समय विशेष में लागू अनुसूचित जाति के अन्तर्गत आता है (धूरिये, 1961)। दलित जातियों में मुख्य रूप से उन जातियों को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें प्राचीनकाल में शुद्र के नाम से जाना जाता था। धार्मिक शब्दावली में जिन्हें अति शुद्र, चांडाल, और अत्यज कहा गया, सामाजिक शब्दावली में उन्हें ही 'अछूत' और कानूनी शब्दावली में इन जातियों को अनुसूचित जातियों कहा गया है। महात्म गाँधी ने इनका नाम 'हरिजन' दिया था (प्रसाद, 2007)। 'अनुसूचित जाति' शब्द की उत्पत्ति भारत सरकार के अधिनियम 1935 में सर्वप्रथम अवतरित हुआ जिसमें अछूत समुदाय की एक सूची तैयारी की गयी। इस सूची में उस समय 429 समुदायों को सूचीबद्ध किया गया जिन्हें अनुसूचित जाति (सूचीबद्ध जाति) कहा जाने लगा। 1935 के पूर्व भारतीय जनगणना 1911 तथा 1921 में इन्हें दलित वर्ग (Depressed Class) के अन्तर्गत रखा गया।

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक दृष्टि से आज भी दलित जातियाँ पिछड़ी हुई हैं। दलित जातियों को समय-समय पर इनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। अनुसूचित जातियाँ एवं अनुसूचित जनजातियाँ, दलित वर्ग के अन्तर्गत आती हैं, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से अविकसित हैं। भारत में पहले हिन्दू समाज में इन जातियों हेतु परम्परागत स्थिति के कारण अनेकानेक सामाजिक-धार्मिक प्रतिबन्ध थे। परन्तु वर्तमान समय में राजनैतिक प्रभाव, शिक्षा का प्रसार व अन्य सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के कारण इनकी स्थितियों में सुधार हुआ है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजनैतिक जागरूकता, शैक्षिक प्रगति, आर्थिक सुधार आदि के कारण इन जातियों में स्वाभिमान जागृत हुआ और वे अपने अधिकारों एवं आत्मरक्षा के लिए और कहीं-कहीं वे अन्यायों का प्रतिरोध करने लगे हैं। आज भी सामंती और सनातनी मनोवृत्ति के लोग इन्हें दबाने का प्रयास करते हैं। जिस कारण जगह-जगह पर अब भी इन पर उत्पीड़न की घटनाएँ घटित होती रहती हैं।

अध्ययन आधार-

प्रस्तुत अध्याय में सम्बन्धित विषयों पर विश्लेषण हेतु प्रायः द्वितीयक सूचनाओं एवं आँकड़ों का अभाव रहा है। अतः दलित जातियों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण इस अध्याय में प्रतिदर्श ग्रामों का प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जो निम्नवत् है:

प्रतिदर्श ग्राम एवं नगर-

प्रतिदर्श ग्राम एवं नगरों के चयन करते समय इन बातों को विशेषतः संज्ञान में लिया गया है कि ये ग्राम एवं नगर अध्ययन क्षेत्र तथा विषय दोनों को समग्र रूप से सन्दर्भित कर सके ग्रामों एवं नगरों के नाम तथा चयन के मुख्य बिन्दु निम्नवत् हैं-

1. सबसे बड़े नगर प्रयागराज (सलोरी), वाराणसी (चाँदमारी) एवं गोरखपुर (मेडिकल कालेज)।
2. सबसे छोटे नगर एवं कस्बा गाजीपुर (गोराबाजार), मऊ (गालीबपुर) आजमगढ़ (सिधारी) एवं सिकन्दरपुर (कस्बा)।
3. अम्बेडकर ग्राम फतेपुर एवं राजापुर (गाजीपुर)।
4. सेवा केन्द्र आधारित ग्राम चन्दवक (जौनपुर) एवं दुबारी (मऊ)।
5. जनसंख्या आकार आधारित ग्राम हरिहरपुर, मढ़ी (जौनपुर) रूपौंदा, रैपुरिया (मिर्जापुर), धुरकरी (सोनभद्र)।
6. राजमार्ग स्थित ग्राम भुजौटी (मऊ)।
7. विकासखण्ड या जनपद सीमा स्थित ग्राम इन्दरबार (वाराणसी)।

8. अनुसूचित जाति जनसंख्या आधारित ग्राम जमुई (बलिया), पाही (आजमगढ़), भोजापुर (चन्दौली), उमरी मनोहरपुर प्रयागराज (इलाहाबाद)।
9. क्षेत्रफल आधारित गाँव मेहड़ा (देवरिया)।

उत्तरदाताओं की आयु संरचना-

व्यक्तिगत सर्वेक्षण के दौरान आयु संरचना को ध्यान में रख कर सभी आयुवर्ग से उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

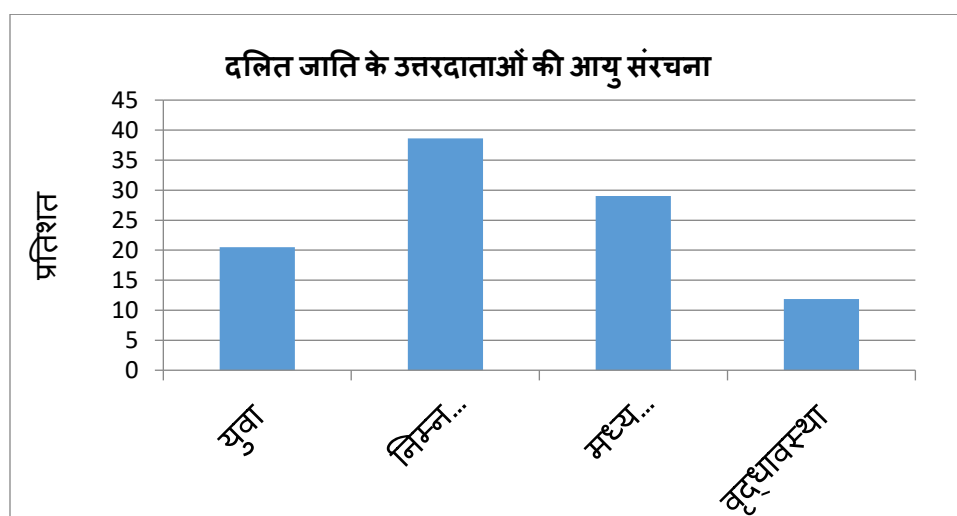
तालिका 4.1 एवं चित्र 4.1 अ से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में 30 वर्ष से कम आयुवर्ग के 20.51 प्रतिशत लोगों को सर्वेक्षण हेतु सम्मिलित किया गया है सर्वाधिक संख्या 30 से 45 वर्ष की आयुवर्ग के लोगों की है जो कुल उत्तरदाताओं की संख्या का 38.62 प्रतिशत है। दूसरी वरीयता में 45 से 60 वर्ष की आयुवर्ग के लोगों को रखा गया है जिनकी संख्या 29.03 प्रतिशत है। 60 वर्ष से ऊपर की आयुवर्ग के लोगों की संख्या 11.85 प्रतिशत है।

तालिका 4.1

दलित जाति के उत्तरदाताओं की आयु संरचना, 2022-23

क्र.सं.	श्रेणी	आयुवर्ग	उत्तरदाता	
			संख्या	प्रतिशत
1	युवा	30 से कम	154	20.51
2	निम्न मध्य आयु	30-45	290	38.62
3	मध्य आयु से उपर	45-60	218	29.03
4	वृद्धावस्था	60 से ऊपर	89	11.85
योग			751	100.00

स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकलित



स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकलित

चित्र 4.1

मद्य उपयोग-

मद्यपान यह स्थिति है जिसमें एक व्यक्ति मात्रा से अधिक उपभोग करने पर अपना नियन्त्रण खो बैठता है (जान्सन, 1973)। तालिका 4.7 एवं चित्र 4.7 से स्पष्ट है कि दलित जातियों की सभी उपजातियों में सामान्यतः मद्य उपभोग का दुर्गुण पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में 11.19 प्रतिशत लोग प्रतिदिन मद्य का उपयोग करते हैं।

इसके अन्तर्गत मुख्यतः दिहाड़ी मजदूर तथा अशिक्षित लोग मद्य का उपयोग प्रतिदिन करते हैं। इनके अनुसार वे प्रतिदिन मद्य सेवन इसलिए करते हैं कि दिन भर काम करने के पश्चात् इससे शारीरिक थकावट दूर हो जाती है। 24.50 प्रतिशत कभी-कभी मद्य का सेवन करते हैं इसमें ज्यादातर लोग साप्ताहिक अवकाश के दिन मद्य सेवन करते हैं। साप्ताहिक अवकाश के दिन मद्य सेवन करने का प्रमुख कारण अधिकांश लोगों को साप्ताहिक वेतन प्राप्त होना है। बहुत से लोग महीने में एक या दो बार मद्य सेवन करते हैं, ये लोग किसी दूसरे के द्वारा खर्च करने पर मद्य सेवन करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में 24.23 प्रतिशत किसी विशेष अवसर जैसे तीज-त्यौहार, जन्मदिन, शादी, नौकरी प्राप्त होने आदि अवसरों पर मद्य सेवन करते हैं। 40.08 प्रतिशत लोग कभी मद्य सेवन नहीं करते। इस श्रेणी के अन्तर्गत ज्यादातर शिक्षित वर्ग है। दलित जातियों में अशिक्षा के कारण मद्यपान करने वालों की संख्या अन्य जातियों की तुलना में अधिक पायी जाती है।

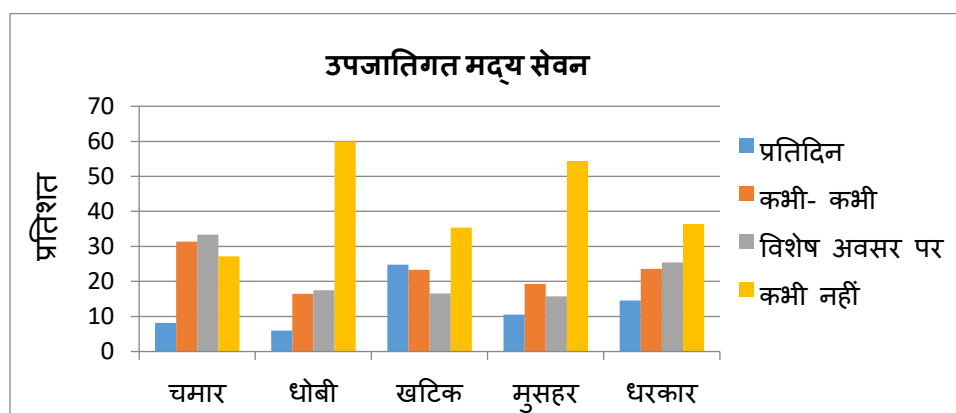
उपजातिगत आधार पर यदि मद्यमान विश्लेषण किया जाय तो खटिक जाति के सर्वाधिक 24.81 प्रतिशत तथा धोबी जाति के लोग सबसे कम 6.00 प्रतिशत प्रतिदिन मद्य सेवन करते हैं। प्रतिदिन सेवन करने में द्वितीय स्थान पर धरकार (14.55 प्रतिशत), तृतीय स्थान पर मुसहर (10.53 प्रतिशत), चतुर्थ स्थान पर चमार (8.17 प्रतिशत) है।

तालिका 4.7

उपजातिगत मद्य सेवन, 2022-23

क्र. सं.	उपजाति	मद्य सेवन								योग	
		प्रतिदिन		कभी- कभी		विशेष अवसर पर		कभी नहीं			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	चमार	25	8.17	96	31.37	102	33.33	83	27.12	306	40.75
2	धोबी	12	6.00	33	16.50	35	17.50	120	60.00	200	26.63
3	खटिक	33	24.81	31	23.31	22	16.54	47	35.34	133	17.71
4	मुसहर	6	10.53	11	19.30	9	15.79	31	54.39	57	7.59
5	धरकार	8	14.55	13	23.64	14	25.45	20	36.36	55	7.32
योग		84	11.19	184	24.50	182	24.23	301	40.08	751	100.00

स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकलित



स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकलित

चित्र 4.7

31.37 प्रतिशत चमार, 16.50 प्रतिशत धोबी, 23.31 प्रतिशत खटिक, 19.30 प्रतिशत मुसहर तथा 23.64 प्रतिशत धरकार जाति के लोग कभी-कभी मद्य सेवन करते हैं। विशेष अवसरों पर चमार 33.33 प्रतिशत, धोबी 17.50 प्रतिशत, खटिक 16.54 प्रतिशत, मुसहर 15.79 प्रतिशत तथा 25.45 प्रतिशत धरकार जाति के लोग मद्यपान करते हैं। 40.08 प्रतिशत लोग मद्यपान नहीं करते हैं। इसका प्रमुख कारण समाज में शिक्षा के प्रसार का है। सर्वाधिक धोबी (60.00 प्रतिशत) जाति मद्यपान का सेवन कभी नहीं करते हैं। तदनन्तर मुसहर (54.39 प्रतिशत), धरकार (36.36 प्रतिशत), खटिक (35.34 प्रतिशत), चमार (27.12 प्रतिशत) लोग कभी मद्यपान नहीं करते हैं।

संदर्भ सूची-

1. आहूजा, राम (2002), सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ 243, 101.
2. खान, एम०ए० (1980), शेड्यूलड कास्ट एण्ड देयर स्टेट्स इन इण्डिया, जयपुर।
3. घूरिये, जी०एस० (1961) कास्ट, क्लास एण्ड आकूपेशन, पापुलर बुक डिपॉ, बाम्बे, 1961, पृष्ठ 14.
4. चन्द्र, सोती शिवेन्द्र (2002), भारत में सामाजिक समस्याएं, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 313-314.
5. जान्सन, एल्मर एच० (1973), सोशल प्राब्लम्स आफ अर्बन मैन, द डार्सी प्रेस, होमवुड, इलिनायस, पृष्ठ 684.
6. प्रसाद, माता (2007), दलित जातियों का दस्तावेज, सम्यक प्रकाशन, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली, पृष्ठ 22.
7. भारद्वाज, ए०एन० (1979), प्राब्लम्स आफ शेड्यूलड कास्ट एण्ड शेड्यूलड ट्राइब्स इन इण्डिया, लाइट एण्ड लाइफ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 38.
8. राम, महेन्द्र (2009), दलित उत्थान में शिक्षा की भूमिका, रिसर्च जर्नल आफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेज, अंक 6, पृष्ठ 691.
9. सिन्हा, आर० के० (1986), एलिनेशन एमन्ग शेड्यूलड कास्ट, मानस पब्लिकेशन, दिल्ली।